



Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की कथा ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की कथा ॥

द्वापर युग में मथुरा नगरी में राजा उग्रसेन का पुत्र कंस बहुत अत्याचारी और क्रूर शासक था। उसकी बहन देवकी का विवाह यदुवंशी राजा वसुदेव के साथ हुआ था। विवाह के बाद जब कंस स्वयं देवकी और वसुदेव को उनके घर छोड़ने जा रहा था, तभी आकाशवाणी हुई— “हे कंस! जिस देवकी की तुम विदाई कर रहे हो, उसी का आठवाँ पुत्र तुम्हारा वध करेगा।”

आकाशवाणी सुनकर कंस भयभीत हो गया और उसने देवकी को मारने का विचार किया। वसुदेव ने कंस को समझाया कि देवकी से उसे कोई भय नहीं है और वे उनकी प्रत्येक संतान उसे सौंप देंगे। कंस ने उनकी बात मान ली, लेकिन देवकी और वसुदेव को कारागार में बंद कर दिया। देवकी की पहली छह संतानों का जन्म होते ही कंस ने उनका वध कर दिया। सातवीं संतान के रूप में भगवान शेषनाग के अंश बलराम जी देवकी के गर्भ में आए। भगवान विष्णु की योगमाया से उनका गर्भ रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया गया। इस प्रकार बलराम जी का जन्म रोहिणी के पुत्र के रूप में हुआ।

इसके बाद देवकी के गर्भ से भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में आठवें पुत्र के रूप में जन्म लेने का संकल्प किया। भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को, रोहिणी नक्षत्र में, आधी रात के समय भगवान श्रीकृष्ण ने कारागार में दिव्य रूप धारण करके जन्म लिया।

भगवान के जन्म लेते ही कारागार प्रकाश से भर गया। श्रीकृष्ण ने देवकी और वसुदेव को अपना दिव्य स्वरूप दिखाया और उन्हें बताया कि वे संसार में धर्म की स्थापना तथा अधर्म का नाश करने के लिए अवतरित हुए हैं। उन्होंने वसुदेव से कहा कि वे उन्हें गोकुल में नंद बाबा और माता यशोदा के घर ले जाएँ।

भगवान की लीला से कारागार के सभी पहरेदार गहरी नींद में सो गए और वसुदेव की बेड़ियाँ अपने आप खुल गईं। वसुदेव श्रीकृष्ण को टोकरी में रखकर यमुना नदी पार करने के लिए निकल पड़े। उस समय तेज वर्षा हो रही थी। भगवान शेषनाग ने अपने फनों से श्रीकृष्ण की रक्षा की और वसुदेव सुरक्षित रूप से यमुना पार कर गोकुल पहुँच गए।

गोकुल में उस समय माता यशोदा ने एक कन्या को जन्म दिया था। वसुदेव ने श्रीकृष्ण को यशोदा जी के पास सुला दिया और उस कन्या को अपने साथ लेकर मथुरा के कारागार लौट आए।

जब कंस को देवकी की आठवीं संतान के जन्म की सूचना मिली, तो वह उस कन्या को मारने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन वह कन्या उसके हाथ से छूटकर देवी योगमाया के रूप में आकाश में प्रकट हुई और बोली—

“हे कंस! तेरा संहार करने वाला जन्म ले चुका है और वह गोकुल में सुरक्षित है।”

यह सुनकर कंस और अधिक भयभीत हो गया। आगे चलकर श्रीकृष्ण ने गोकुल और वृंदावन में अनेक दिव्य लीलाएँ कीं और अंततः मथुरा पहुँचकर कंस का वध किया। उन्होंने अत्याचार का अंत करके धर्म की स्थापना की।